माधव हाड़ा

माधव हाड़ा प्रतिष्ठित साहित्यिक आलोचक और शिक्षाविद् हैं। उनकी रुचि के प्राथमिक क्षेत्रों में मध्यकालीन साहित्य और इतिहास हैं। मीरां पर एकाग्र उनकी बहुप्रशंसित कृति *पचरंग चोला पहर सखी री* (2015) का *मीरां वर्सेज़ मीरां* (2020) नाम से अंग्रेज़ी अनुवाद प्रकाशित हुआ है। यह पुस्तक मध्यकालीन भक्त कवयित्री मीरांबाई के जीवन और समाज की पड़ताल है। वे भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में अध्येता रहे हैं और उनके शोध कार्य का विनिबंध *पद्मिनी: इतिहास और कथा-काव्य की जुगलबंदी* (2023) नाम से संस्थान ने प्रकाशित किया है। हाल ही में, माधव हाड़ा ने *भक्ति अगाध अनंत* (2025) नामक भारतीय भक्तिकविता का सचयन संपादित किया है, जिसमें छठी से लगाकर उन्नीसवीं सदी तक की रचनाएँ हैं। उन्होंने *कालजयी कवि और उनका काव्य* नामक एक पुस्तक शृंखला का भी संपादन भी किया है, जिसमें कबीर, रैदास, मीरां, तुलसीदास, अमीर ख़ुसरो, सूरदास, बुल्लेशाह, गुरु नानक, जायसी, रहीम, सहजोबाई, लालन फ़क़ीर, नरसी मेहता, अक्क महादेवी, ललद्यद, दादूदयाल, रसखान, आंडाल, नामदेव, बिहारी, विद्यापति और घनानंद की रचनाएँ विस्तृत भूमिका के साथ सम्मिलित की गई हैं। उनकी अन्य महत्त्वपूर्ण मौलिक कृतियों में *आलोचना के नए क्षितिज* (2025), *सहजोबाई: जीवन भक्ति और काव्य* (2024), *पुतली ने आकाश चुराया* (2024),

वैदहि औखद जाणै: मीरां और पश्चिमी ज्ञान मीमांसा (2023), *देहरी पर दीपक* (2020), *सीढ़ियाँ चढ़ता मीडिया* (2012), *मीडिया, साहित्य और संस्कृति* (2006), *कविता का पूरा दृश्य ’*(1992) और *तनी हुई रस्सी पर* (1987) हैं। उन्होंने *सबके राम* (2023), *सुभद्राकुमारी चौहान की संपूर्ण कविताएँ* (2023), *सौने काट न लागे* (2022), *एक भाव-अनेक नाम* (2022), *मीरां रचना संचयन* (2017) और *कथेतर* (2017) आदि पुस्तकों का संपादन भी किया है।

माधव हाड़ा कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों के सम्मानित हैं, जिनमें के के बिड़ला बिहारी पुरस्कार, राजस्थान साहित्य, भाषा और संस्कृति अकादमी का संस्कृति सम्मान, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार का भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार और राजस्थान साहित्य अकादमी का देवराज उपाध्याय पुरस्कार शामिल हैं। वे भारतीय उच्च अध्ययन, शिमला की पत्रिकाओं, *चेतना* और *हिमांजलि* के संपादक भी रहे हैं।

राजस्थान सरकार की उच्च शिक्षा सेवा के साथ 30 से ज़्यादा वर्षों के जुड़ाव के साथ, उन्होंने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में हिंदी विभाग के आचार्य और विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य किया है। संप्रति, वे साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली की साधारण परिषद् और हिंदी परामर्श मंडल के सदस्य हैं।

संपर्क : madhavhada@gmail.com